

देशी गाय का दूध

देशी गाय के दूध में स्वर्ण है, बुद्धि वर्धक भी है और विटामिन डी की पूर्ति करता है

देशी गाय के दूध को हमारे भारतीय साहित्य और संस्कृति में महत्वपूर्ण माना जाता है। गाय दूध आपके शारीरिक स्वास्थ्य और आहार के लिए एक प्रमुख स्रोत होता है, साथ ही इसके औषधीय गुणों के कारण यह प्राकृतिक चिकित्सा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आपने देखा होगा देशी गाय का दूध कुछ पीलापन लिए होता है क्योंकि उसमें स्वर्णक्षार होता है। जो अन्य दूध में नहीं पाया जाता है।

देशी गाय का दूध स्वास्थ्य के लिए अत्यंत गुणकारी होता है। यह पूर्ण पोषण देने वाला आहार है, जो शरीर को प्रोटीन, कैल्शियम, विटामिन और अन्य महत्वपूर्ण पोषक तत्वों से भरपूर बनाता है। दूध में मौजूद प्रोटीन शरीर के मांसपेशियों, हड्डियों, बालों और नाखूनों को मजबूत बनाने में मदद करता है। कैल्शियम दूध में होने के कारण हड्डियों की मजबूती को बढ़ाता है और अस्थियों को स्वस्थ रखने में मदद करता है। दूध विटामिन डी का एक महत्वपूर्ण स्रोत होता है, जो हड्डियों के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक होता है।

देशी गाय के दूध में विटामिन बी-कॉम्प्लेक्स, विटामिन ए, विटामिन के और विटामिन डी के अलावा अन्य महत्वपूर्ण पोषक तत्व भी होते हैं। इसके अलावा, देशी गाय के दूध में मिट्टी (जैसामा), बैक्टीरिया और प्रोबायोटिक एनजाइम्स भी होते हैं, जो पाचन और आमाशय के स्वास्थ्य को सुधारने में मदद करते हैं।

देशी गाय के दूध में उपस्थित औषधीय गुणों के कारण इसे प्राकृतिक चिकित्सा में भी उपयोगी माना जाता है। यह शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने, शरीर को ऊर्जा प्रदान करने, रोगों से लड़ने में सहायता करने और विभिन्न रोगों की रोकथाम में मदद करने में सक्षम होता है। दूध में मौजूद ग्लूटामाइन नामक प्रोटीन, इम्यूनोग्लोबुलिन और लैक्टोफेरिन रोगों के खिलाफ संरक्षण प्रदान करते हैं।

देशी गाय के दूध का नियमित सेवन सामान्य स्वास्थ्य को बनाए रखने के

साथ-साथ शरीर को ऊर्जा, पोषण और रोग प्रति रक्षा प्रदान करने में मदद कर सकता है। देशी गाय के दूध का स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने के लिए, आपको इसे स्वच्छ और सुरक्षित रूप से प्राप्त करना चाहिए।

सारांश के रूप में, देशी गाय के दूध को हमारे स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। इसका सेवन हमारे शारीरिक पोषण को बढ़ाता है, रोगों से लड़ने में मदद करता है और प्राकृतिक चिकित्सा में भी उपयोगी होता है।

इसलिए, देशी गाय के दूध का नियमित सेवन आपके स्वास्थ्य और आम जीवन की गुणवत्ता को बढ़ा सकता है।

A1 दूध जैसी जैसी पश्चिम देशों की गाय से लिया जाता है। भारत में आमतौर पर यही दूध मिलता है। वहीं, दूसरी तरफ A2 दूध भारतीय मूल की गिर और साहीवाल जैसी गायों से मिलता है। A2 दूध को जो चीज अलग बनाती है, वह है इसकी रासायनिक संरचना। एक्सपर्ट्स की मानें, तो दूध में पाया जाने वाला 80 फीसदी प्रोटीन केसीन (Casein) होता है। A1 गाय के दूध में A1 बीटा-केसीन होता है और A2 गाय के दूध में A2 बीटा-केसीन होता है।

हाल ही में हुए शोध बताते हैं कि A1 दूध में पाया जाने वाला बीटा-केसीन दिल की बीमारी, टाइप-1 डायबिटीज का खतरा बढ़ाता है और यह इंप्लामेटरी भी होता है। साथ ही A2 की तुलना, A1 दूध पाचन में भी दिक्कतें पैदा करता है।

एक बार अकबर ने बीरबल से पूछा - सबसे अच्छा दूध किस प्राणी का होता है ? बीरबल ने उत्तर दिया - भैंस का। अकबर ने कहा लोग कहते हैं सबसे अच्छा दूध तो गाय को होता है तो बीरबल ने जवाब दिया- क्षमा करे महाराज आपने पूछा सबसे अच्छा दूध किसका होता है तो मैंने कहा भैंस का। क्योंकि गाय का तो दूध नहीं "अमृत" होता है।

देशी गाय के दूध के फायदे

1. पाचन में सहायक

गाय का दूध आपको बदहजमी से बचाने में मदद कर सकता है। दरअसल, गाय के दूध में विटामिन बी-12 पाया जाता है। यह विटामिन पाचन की प्रक्रिया में मदद करता है। दूध के प्रति कप में 1.2 मि.ग्रा. विटामिन बी-12 होता है। एक दिन में वयस्कों को 2.4 मि.ग्रा. विटामिन बी-12 की

जरूरत है यानी एक कप दूध आपके शरीर में विटामिन बी-12 की आधी जरूरत को पूरा कर देता है। वहीं, गाय के दूध का लगभग 80 प्रतिशत प्रोटीन कैसीइन (casein) होता है, जो पूरे शरीर में कैल्शियम और फॉस्फेट को पहुंचाता और पाचन में सहायता करता है। इसलिए, कहा जा सकता है कि दूध का सेवन करने से खाना अच्छे से हजम हो सकता है।

2. कैंसर से बचाव

माना जाता है कि कैंसर के इलाज में भी गाय के दूध का सेवन फायदेमंद होता है। दरअसल, गाय के दूध में विटामिन-डी उच्च मात्रा में पाया जाता है जो कैंसर के खतरे को कम कर सकता है। इसलिए, कहा जाता है कि गाय का दूध कैंसर की आशंका को पनपने से रोकने में मदद कर सकता है। एक रिसर्च की मानें, तो दूध और डेयरी उत्पाद का सेवन संभवतः कोलोरेक्टल कैंसर, ब्लैडर कैंसर, गैस्ट्रिक कैंसर और स्तन कैंसर से बचाता है।

3. आंखों के स्वास्थ्य के लिए

गाय के दूध को आंखों की रोशनी बढ़ाने में भी सहायक माना जाता है, क्योंकि गाय के दूध में विटामिन-ए होता है। विटामिन-ए आंखों के लिए जरूरी पोषक तत्वों में से एक है। विटामिन-ए आंखों की रोशनी को सुधारने में मदद करता है। इसके अलावा विटामिन-ए की कमी की से आपको रतौंधी, आंखों के सफेद हिस्से में धब्बे (बिटोट स्पॉट) जैसी कई आंखों से संबंधी समस्याएं हो सकती हैं।



4. हृदय स्वास्थ्य

गाय का दूध पीने से आप हृदय को भी स्वस्थ रख सकते हैं। दूध पीने से इस्केमिक स्ट्रोक (ब्लड क्लोट होने की वजह से आने वाला स्ट्रोक) के जोखिम को कम किया जा सकता है। साथ ही इस्केमिक हृदय रोग को कम करने में भी फायदेमंद माना जाता है।

इसमें मौजूद सैचुरेटेड फैटी एसिड के उच्च प्लाज्मा स्तर भी हृदय रोग के जोखिम को कम करने में मदद करते हैं, जो डेयरी उत्पादों में मौजूद रहते हैं।

5. इम्यूनिटी

गाय के कच्चे दूध में प्रोबायोटिक्स यानी जीवित माइक्रो ऑर्गेनाइज्म होते हैं, जो इम्यूनिटी को बढ़ाते हैं। एक अध्ययन में पाया गया है कि धारोष्ण कच्चा दूध पीने से बच्चों का इम्यूनसिस्टम मजबूत होता है और उनका शरीर कई तरह के संक्रमण का सामना करके बच्चों के विकास में मदद करता है। इसके अलावा, दूध उबालकर पीने से भी इम्यून सिस्टम मजबूत होता है। ऐसे में कहा जा सकता है कि दूध आपको बीमारियों से बचाने में भी मदद कर सकता है, क्योंकि जब आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली मजबूत रहेगी, तो आपका शरीर रोगों से लड़कर आपको उनसे बचाता रहेगा।

6. हड्डी स्वास्थ्य

गाय का दूध हड्डी को स्वस्थ रखने में भी काफी सहायक हो सकता है। दरअसल, दूध और डेयरी के अन्य उत्पाद मैग्नीशियम और कैल्शियम के महत्वपूर्ण स्रोत होते हैं। इसलिए, हड्डियों के विकास के लिए दूध का सेवन काफी महत्वपूर्ण माना जाता है। बच्चों व युवाओं के साथ ही वयस्कों के हड्डी स्वास्थ्य के लिए भी दूध को अच्छा माना गया है।

7. वजन को रखे नियंत्रित

दुनिया भर में अधिक वजन और मोटापे की वजह से कई लोग परेशान हैं। इससे छुटकारा पाने के लिए आप तरह-तरह के

गाय का दूध शक्ति वर्धक और बुद्धि वर्धक होता है— जब मनुष्य का बच्चा जन्म लेता है तो उसे अपने पैरों पर चलने में 8-9 महीने लग जाते हैं। भैंस के बच्चे को चलने में 10-12 दिन लग जाते हैं, और गाय का बच्चा जन्म लेते ही उछल कूद करने लगता है।



जतन भी करते होंगे, लेकिन क्या कभी गाय का दूध पीने के बारे में सोचा है। जी हां, गाय का दूध युवाओं के बढ़ते वजन को रोकने में मदद कर सकता है। एक विश्लेषण के अनुसार, डेयरी सेवन करने वाले 38 प्रतिशत बच्चों का वजन डेयरी का सेवन कम करने वाले बच्चों के मुकाबले संतुलित था। दरअसल, गाय का दूध और डेयरी उत्पाद प्रोटीन के अच्छे स्रोत हैं और प्रोटीन वजन घटाने या फिर उसे नियंत्रित रखने में मदद करता है। यह भोजन के बाद बार-बार उठने वाली खाने की इच्छा को कम करता है, जो एनर्जी की अधिक खपत को रोकता है, जिससे शरीर की वसा कम होती है।

8. मस्तिष्क विकास

दूध मस्तिष्क विकास के लिए भी अहम माना जाता है। इसमें मौजूद ओमेगा-3 फैटी एसिड मनुष्यों के मस्तिष्क से संबंधित प्रक्रियाओं में मदद करता है। हमारे दिमाग को बेहतर तरीके से कार्य करने में ओमेगा-3 फैटी एसिड सहायक माना गया है। ओमेगा-3 फैटी एसिड लेने वाले बच्चे में दिमाग विकास संबंधी विकार (जैसे - पढ़ने, वर्तनी में अंतर करने और व्यवहार) को कम करने में फायदेमंद माना गया है। शायद यही वजह है कि बच्चों को गाय का दूध पीने की सलाह दी जाती है।

9. मूड को बनाए बेहतर

जैसा कि हम आपको ऊपर बता ही चुके हैं कि गाय का दूध आपके मस्तिष्क के स्वास्थ्य को बनाए रखने में काफी मददगार साबित हो सकता है। ऐसे में माना जाता है कि इसे पीने से मानसिक विकार को भी दूर किया जा सकता है। दरअसल, दूध में ओमेगा-फैटी एसिड पाया जाता है। अगर शरीर में इसकी कमी हो जाए, तो दिमागी विकार जैसे डिस्लेक्सिया (पढ़ने में

दिवक्त), एकाग्रता की कमी, अवसाद, बाइपोलर डिस ऑर्डर (मूड स्विंग), याददाश्त में कमी और सিজोफ्रेनिया (सोचने और समझने की क्षमता को प्रभावित करने वाला विकार) का जोखिम बढ़ जाता है।

10. एलोपेसिया (Alopecia)

एलोपेसिया बालों के झड़ने की समस्या है। इस दौरान बाल पैच में झड़ने लगते हैं। एक सेमी से 4 सेमी तक के हिस्से से बाल झड़कर खत्म हो जाते हैं और वो हिस्सा खाली और चिकना हो जाता है। वैसे तो एलोपेसिया ओटोइम्यून की वजह से होता है। कुछ पोषक तत्वों जैसे- विटामिन-डी और जिंक के सेवन से यह समस्या कम हो सकती है। ये दोनों ही पोषक तत्व दूध में पाए जाते हैं। ऐसे में माना जाता है कि एलोपेसिया की समस्या से गुजर रहे लोगों को गाय दूध का सेवन करना चाहिए।

11. दमकती त्वचा और एंटी एजिंग

माना जाता है कि कच्चे दूध को चेहरे पर लगाने से काफी निखार आता है। दरअसल, प्राचीन काल से लोग दूध का इस्तेमाल नहाने व चेहरा धोने के लिए करते रहे हैं। ऐसे में आप भी गाय के कच्चे दूध में रूई डूबोकर अपने चेहरे पर लगा सकते हैं। आयुर्वेद के मुताबिक ऐसा करने से चेहरे में चमक आती है। शायद यही वजह है चेहरे को साफ करने और फेस पैक बनाने के लिए गाय के कच्चे दूध का इस्तेमाल किया जाता है। वैसे दूध में रेटिनॉल (Retinol) पाया जाता है जिसे चेहरे के लिए वरदान माना जाता है। रेटिनॉल विटामिन-ए होता है, जो बढ़ती उम्र के सभी लक्षणों को दूर कर आपको दमकती चेहरा देता है। विटामिन-ए की कमी से त्वचा रूखी होने लगती है। ऐसे में आप गाय के दूध का उपयोग करके त्वचा की नमी को बरकरार रख सकते हैं।

12. त्वचा स्वास्थ्य

गाय के दूध में मौजूद विटामिन-ए और प्रोटीन हमारे चेहरे के लिए वरदान से कम नहीं है। गाय के दूध में पाए जाने वाले ये दोनों पोषक तत्व त्वचा के स्वास्थ्य और सुंदरता को बढ़ाएं रखने में मदद करते हैं। इसके अलावा, गाय के दूध में विटामिन-डी भी होता है, जो त्वचा की बढ़ती उम्र को रोकने में मदद कर सकता है। आप अपनी खूबसूरती को बढ़ाने के लिए रोजाना गाय के दूध का सेवन कर सकते हैं। साथ ही इसे किसी फेस पैक में मिलाकर भी चेहरे पर लगा सकते हैं।

ऐसे ही कहीं 100 भैंसे बंदी हो और एक भैंस के बच्चे को छोड़ दीजिये तो वो बड़ी मशिकुल से सूघंते सूघंते अपनी माँ के पास पहुँच पाता है। जबकि कहीं सौ गाये बंधी हो एक गाय के बच्चेको छोड़ दीजिये तो उछलते कूदते तुरंत अपनी माँ के पास पहुँच जायेगा क्योंकि उसमें इतनी बुद्धि होती है और वो बुद्धि उसे अपनी माँ के दूध याने गाय के दूध पीने से मिलती है और वो ही बात हम पर भी लागू होती है। भैंस को दूध पियेंगे तो वैसी बुद्धि और गाय का दूध पियेंगेतो वैसी बुद्धि प्राप्त होगी।

पंचगव्य थेरेपी शरीर,मन और आत्मा में संतुलन बनाती है- गणिवर्य आनंदचंद्र सागर मसा पंचगव्य आधारित मैगजीन का विमोचन आनंदचंद्र सागरजी मसा की निश्रा में



इंदौर, पंचगव्य थेरेपी एक वैदिक उपचार पद्धति है जिसमें पंचगव्य का उपयोग स्वास्थ्य सुधार और रोगों के निदान में किया जाता है। पंचगव्य के पाँच प्रमुख घटक हैंरू गाय का दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत। उपरोक्त विचार प.पू. गणिवर्य आनन्दचंद्र सागरजी जी मसा ने पंचगव्य आधारित स्वर्णिम मैगजीन के प्रथम अंक के विमोचन के अवसर पर व्यक्त किये। उन्होंने पंचगव्य के गुणों, उपयोगों और लाभों पर चर्चा करते हुए इसे एक व्यावहारिक और प्रभावी उपचार पद्धति के रूप में प्रदर्शित किया जो शरीर, मन और आत्मा के संतुलन को बनाए रखने में मदद करती है।

पंचगव्य के सेवन की महत्ता, उचित रूप से इसका उपयोग करने के तरीके, रोगों के इलाज में पंचगव्य का उपयोग, आहार और जीवनशैली में परिवर्तन के बारे में बात

की। पंचगव्य का सेवन करने से हम अपनी शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक ताकत को मजबूत कर सकते हैं और उत्तम स्वास्थ्य और आत्मा की विकास को प्राप्त कर सकते हैं।

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ उपाश्रय नवकार वाटिका रेसकोर्स रोड पर चल रहे चातुर्मास में वीरेन्द्र कुमार रेखा जैन ने बतलाया कि मैगजीन के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य जनता को पंचगव्य के लाभों के बारे में जागरूक करना और स्वस्थ और खुशहाल जीवन जीने के लिए प्रेरित करना है। संपादक विवेक शारदा जैन बतलाया कि यह डिजिटल मैगजीन पूर्णतः निःशुल्क देश के घर घर में पहुँचाने का प्रयास करेंगे। इस अवसर पर रेसकोर्स उपाश्रय के अध्यक्ष डॉ. प्रकाश बांगानी, महासचिव यशवंत जैन एवं बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित थे।



सेहत के लिए चमत्कार है हल्दी वाला दूध

दूध में आधा चम्मच हल्दी पाउडर डालकर उबालकर पीजिए

हल्दी दूध सेहत के लिए बेहद फायदेमंद होता है। येही वजह है कि घरेलू नुस्खों के तौर पर हल्दी वाला दूध पीने की सलाह दी जाती है। आयुर्वेद में भी हल्दी को सबसे बेहतरीन नेचुरल एंटीबायोटिक माना गया है। अगर आप हल्दी वाला दूध पीते हैं, तो आपको कई तरह के स्वास्थ्य लाभ होते हैं। स्किन से लेकर पेट और शरीर के कई रोगों के लिए हल्दी वाला दूध लाभकारी होता है। हल्दी वैसे भी कई औषधीय गुणों से परिपूर्ण है। दूध में आधा चम्मच हल्दी पाउडर डालकर उबालकर पीजिए।

वहीं, दूध में कई पौष्टिक तत्व होते हैं, जो हमें बीमारियों से बचाते हैं। दूध में कैल्शियम से लेकर प्रोटीन और विटामिन तक कई पौष्टिक तत्व होते हैं। दूध पीने से शरीर हाइड्रेड ही नहीं होता, बल्कि तनाव भी दूर होता है और हड्डियां मजबूत होती हैं। जब आप दूध में हल्दी मिलाकर पीते हैं, तो इसके औषधीय गुण कई गुना बढ़ जाते हैं। ये ही वजह है कि हल्दी दूध को इसके गुणों के कारण गोल्डन मिल्क (Golden Milk) भी कहा जाता है। आइये हल्दी दूध के कुछ फायदों के बारे में जानते हैं।

1. जब आप रात में सोने से पहले हल्दी वाले दूध का सेवन करते हैं, तो यह मानसिक थकान, चिंता और तनाव को कम करने में मदद करता है। साथ ही आपके नर्वस सिस्टम में सुधार करता है।

2. हल्दी वाला दूध पीने से आपकी रोग प्रति रोधक क्षमता बढ़ती है। अगर आप रात को सोने से पहले एक गिलास दूध में थोड़ी सी हल्दी मिलाकर पीते हैं तो यह आपको बीमारियों से बचाता और आपकी रोग प्रतिरोधक



क्षमता को बढ़ाता है। इसलिए रात को सोने से पहले एक गिलास गुनगुना हल्दी वाला दूध पीने की सलाह दी जाती है।

3. हल्दी वाला दूध चोट में भी सहायक माना जाता है, जबकि यह टूटी हड्डी को भी जल्दी जुड़ने में मदद करता है हल्दी दूध पीने से हड्डियों में होने वाला दर्द दूर होता है।

4. हल्दी और दूध पेट की समस्याओं से निजात दिलाता है।

5. हल्दी दूध पीने से शरीर के सारे विषैले टॉक्सिन बाहर निकल जाते हैं और पाचन क्रिया भी ठीक रहती है।

सोने से पहले जब आप हल्दी वाली दूध का सेवन करके सोते हैं, तो सुबह मलत्याग में आसानी होती है। इससे कब्ज से बचाव होता है और पेट संबंधी समस्याएं दूर रहती हैं।

6. रोजाना हल्दी वाला दूध पीने से चेहरे पर निखार आता है।

7. हल्दी में एंटीसेप्टिक व एंटी बैक्टीरियल गुण होते हैं जो खजुली और मुंहासे में फायदेमंद होते हैं। त्वचा के कील-मुहासे, दाग-धब्बे और कालापन दूर करने में हल्दी वाला दूध बहुत लाभकारी है। हल्दी त्वचा में मेलेनिन के उत्पादन को कंट्रोल करती है, जो त्वचा को उसका रंग प्रदान करता है। साथ ही मुहांसों की सूजन को कम करती है। यह त्वचा की एलर्जी, खुजली और चकत्ते आदि दूर करने में भी मदद करती है।

8. यहां तक कहा जाता है कि हल्दी वाला दूध पीने से अर्थराइटिस की बीमारी नहीं होती है। चोट के घाव की तरह ही हल्दी वाला पीने से शरीर, मांसपेशियों और

जोड़ों के दर्द और सूजन को कम करने में मदद मिलती है। हल्दी में मौजूद करक्यूमिन एक शक्तिशाली एंटी-इन्फ्लेमेटरी और प्राकृतिक एंटीसेप्टिक के रूप में काम करता है। जिससे यह सूजन और दर्द से राहत प्रदान करने में बहुत प्रभावी है।

9. हल्दी और दूध पीने से तनाव दूर होता है और अनिद्रा की समस्या भी दूर होती है।

10. गर्म हल्दी और दूध पीने से दमा, ब्रोंकाइटिस, फेफड़ों में कफ और साइनस जैसी समस्याओं में राहत मिलती है। सर्दी खांसी में बेहद लाभकारी होता है हल्दी दूध।

11. हल्दी वाला दूध बैक्टीरियर और वायरल संक्रमण से लड़ने में मददगार होता है।

12. यहां तक कहा जाता है कि हल्दी और दूध पीने से मोटापा कम होता है।

13. हल्दी और दूध पीने से ब्लड सर्कुलेशन ठीक रहता है। वैसे भी हल्दी को ब्लड प्यूरिफायर माना गया है।

14. हल्दी और दूध पीने से लीवर मजबूत होता है और पेट की बीमारियां नहीं होती हैं।

15. हल्दी और दूध महिलाओं को महावारी में होने वाले दर्द से राहत देता है।

16. नर्वस सिस्ट को शांत करके यह आपकी नींद से जुड़ी समस्याओं में सुधार करता है। अनिद्रा, नींद के दौरान बेचौनी और खराब नींद की समस्या दूर करने में हल्दी वाला बहुत लाभकारी है। यह आपको एक अच्छी गुणवत्ता वाली नींद लेने में मदद करता है।

17. हल्दी दूध का सेवन पुरुषों के लिए बेहद फायदेमंद माना जाता है। रात के समय अगर पुरुष एक गिलास दूध में थोड़ी सी हल्दी मिलाकर उसका सेवन रोज करता है तो इससे फर्टिलिटी बढ़ती है, जबकि शरीर में कमजोरी भी नहीं होती है। इसलिए रात को सोने से पहले पुरुषों को हल्दी वाला दूध पीने की सलाह दी जाती है।



Panoramic Vietnam



7 Nights
8 Days



Departure Dates:
September 29th & October 7th

With Our Own Chef 100% Veg / Jain Food



☎ Nilesh Mehta: +91 98400 45533 | +91 72007 45533

🌐 www.vutravels.com ✉ nmehta@vutravels.com 📱 @VUtoursandtravels

पंचगव्य थैरेपी पर रिसर्च - अनेकों रोगों में है कारगर

अनेकों साध्य-असाध्य बीमारियों के रोगी जो इलाज कराते-कराते थक गए थे और अपनी मौत उन्हें नजर आती थी वो फिर से जी उठे, बीमारी से छुटकारा पाने में सफल हुए सामान्य जीवन जीने लगे, क्योंकि पंचगव्य थैरेपी ने उन्हें नया जीवनदान दिया।

घातक बीमारियों में भी कारगर इलाज सम्भव हो रहा है, पंचगव्य चिकित्सा पद्धति से। पृथ्वी पर मनुष्य के स्वास्थ्य की रक्षा करने में गाय के द्वारा दिए जाने वाले गोमूत्र, गोबर, दूध, दही, घी का अत्यधिक महत्व पुनः प्रतिपादित हो चुका है। जहां वर्तमान में प्रचलित कोई भी चिकित्सा पद्धति कारगर साबित नहीं हुई वहीं पंचगव्य चिकित्सा पद्धति ने स्थापित कर दिया कि गाय ही मनुष्य की सबसे बड़ी रक्षक है।

लाभान्वित मरीजों से चर्चा कर मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री थी दिग्विजयसिंह इतने प्रभावित हुए की उन्होंने म. प्र. शासन के स्वास्थ्य विभाग में 32 हजार स्वास्थ्य रक्षकों को वीरेन्द्र कुमार जैन से गोमूत्र चिकित्सा पद्धति प्रशिक्षण दिलवाया है।

अस्थमा, डायबिटीज, सोरायसिस, एकजीमा, कैंसर, एड्स, गठिया, अर्थराइटिस, हृदयरोग, प्रोस्टेट, माइग्रेन, एसिडिटी, सायटिका, टी.बी., पुरुषों की यौन कमजोरी, मूत्र रोगों, स्त्री रोगों, हेपेटाइटिस ए.बी.सी. में श्री जैन द्वारा मार्गदर्शित गोमूत्र चिकित्सा पद्धति के लाभों को देखते हुए मानव समाज अपने जीवन की रक्षा करने के लिए इस पद्धति को अपना रहा है।

श्री जैन द्वारा इन्दौर में संचालित जैन्स काउ यूरीन थैरेपी हेल्थ क्लीनिक पर श्वसन तंत्र पर रिसर्च किया गया। रिसर्च हेतु कुल 80 मरीजों को चुना गया, जो श्वसन तंत्र के विभिन्न रोगों एवं अस्थमा से पीड़ित थे। उनका गोमूत्र चिकित्सा पद्धति से इलाज किया गया। इनमें 55 पुरुष व 25 महिलाएँ सम्मिलित थी, जिनकी औसत उम्र 40.17 वर्ष थी। ये सभी औसतन 6.8 वर्षों से पीड़ित थे। इनको गोमूत्र चिकित्सा पद्धति से इलाज प्रारंभ होने के औसतन 6.34 माह में औसतन 96.75 प्रतिशत लाभ मिला।

चर्मरोग पर रिसर्च हेतु कुल 68 मरीजों को चुना गया, जो विभिन्न चर्म रोगों से पीड़ित थे। उनका गोमूत्र चिकित्सा पद्धति से इलाज किया गया। इनमें 44 पुरुष व 24 महिलाएँ सम्मिलित थी, जिनकी औसत उम्र 40.29 वर्ष थी। ये सभी औसतन 8 वर्षों से पीड़ित थे। इनको गोमूत्र चिकित्सा पद्धति से इलाज प्रारंभ होने के औसतन 6.24 माह में औसतन 88.1



राष्ट्रीय कामधेनु आयोग के चेयरमेन, पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं कैंसर सर्जन डॉ. वल्लभ भाई कमीरिया पंचगव्य थैरेपी से विभिन्न रोगों के लाभान्वित मरीजों के रिकार्ड देखते हुए।

प्रतिशत लाभ मिला।

रिसर्च हेतु डायबिटीज के 69 मरीजों को सम्मिलित किया गया, जिनकी औसत उम्र 52.65 है। औसतन 7.25 माह में 85 प्रतिशत लाभ देखा गया जो मरीज औसतन 5.43 वर्षों से मधुमेह से पीड़ित थे।

हाईब्लड प्रेशर के 59 मरीज रिसर्च हेतु लिए गए जो 6.3 वर्षों से पीड़ित थे, जिनकी औसत उम्र 53.98 वर्ष है। उन्हें 5.18 माह के उपचार में 82 प्रतिशत लाभ देखा गया।

रिसर्च हेतु विभिन्न प्रकार के 25 कैंसर मरीज जिनकी उम्र 50.76 वर्ष है लिया गया। 10.09 माह के औसत उपचार में 73.3 प्रतिशत लाभ देखा गया।

हृदयरोग के 22 मरीजों पर रिसर्च में पाया गया कि गोमूत्र चिकित्सा पद्धति से 75 प्रतिशत लाभ हुआ, जो 2.82 वर्षों से पीड़ित थे और उनकी औसत उम्र 55.72 वर्ष है।

संभोग क्षीणता वाले 9 पुरुषों को रिसर्च हेतु चुना गया। औसत 45.62 वर्ष उम्र के मरीजों को 8.87 माह में 90 प्रतिशत लाभ हुआ।

एड्स के 10 मरीज रिसर्च हेतु लिए गए, जिनमें 6 पुरुष एवं 4 महिलाएँ हैं, उन्हें 3.5 माह में बुखार, दस्त, खुजली, खांसी में पूर्ण लाभ होकर वजन बढ़ना प्रारंभ हुआ। लगातार 10-12 माह गोमूत्र चिकित्सा पद्धति से इलाज करने पर सीडी 4 में औसतन 60 प्रतिशत बढ़ोतरी का लाभ पाया गया।

तंत्रिका तंत्र रिसर्च हेतु कुल 83 मरीजों को चुना गया,

जो तंत्रिका तंत्र के विभिन्न रोगों से पीड़ित थे। उनका गोमूत्र चिकित्सा पद्धति से इलाज किया गया। इनमें 63 पुरुष व 20 महिलाएँ सम्मिलित थी, जिनकी औसत उम्र 45.8 वर्ष थी। ये सभी औसतन 5.71 वर्षों से पीड़ित थे। इनको गोमूत्र चिकित्सा पद्धति से इलाज प्रारंभ होने के औसतन 8.87 माह में औसतन 94.27 प्रतिशत लाभ मिला।

अंत स्त्रावी तंत्र के विभिन्न रोगियों में औसतन 7.71 माह के उपचार से औसतन 92.8 प्रतिशत लाभ देखा गया।

गोमूत्र चिकित्सा पद्धति नेत्ररोगों में भी कारगर सिद्ध हुई है। रिसर्च हेतु कुल 18 मरीजों को चुना गया, जो नेत्र के विभिन्न रोगों से पीड़ित थे। उनका गोमूत्र चिकित्सा पद्धति से इलाज किया गया। इनमें 14 पुरुष व 4 महिलाएँ सम्मिलित थी, जिनकी औसत उम्र 45.4 वर्ष थी। ये सभी औसतन 6.15 वर्षों से पीड़ित थे। इनकी गोमूत्र चिकित्सा पद्धति से इलाज प्रारंभ होने के औसतन 8.27 माह में औसतन 91.66 प्रतिशत लाभ मिला।

नाक कान, गलेके मरीजों पर गोमूत्र चिकित्सा के अनुकूल परिणाम प्राप्त हुए हैं। रिसर्च हेतु कुल 26 मरीजों को चुना गया, जो नाक, कान, गले के विभिन्न रोगों से पीड़ित थे। उनका गोमूत्र चिकित्सा पद्धति से इलाज किया गया। इनमें 19 पुरुष व 7 महिलाएँ सम्मिलित थी, जिनकी औसत उम्र 39.76 वर्ष थी। ये सभी औसतन 8.8 वर्षों से पीड़ित थे। इनको गोमूत्र चिकित्सा पद्धति से इलाज प्रारंभ होने के औसतन 5.45 माह में औसतन 98.46 प्रतिशत लाभ मिला।

गठिया स्पाण्डोलाइटिस, सायटिका, घुटनों का दर्द आदि रोगों पर भी गोमूत्र चिकित्सा का अच्छा प्रभाव देखा गया। रिसर्च हेतु कुल 66 मरीजों को चुना गया, जो अस्थि एवं संधियों

के विभिन्न रोगों से पीड़ित थे। उनका गोमूत्र चिकित्सा पद्धति से इलाज किया गया। इनमें 40 पुरुष व 26 महिलाएँ सम्मिलित थी, जिनकी औसत उम्र 45.77 वर्ष थी। ये सभी औसतन 3.05 वर्षों से पीड़ित थे। इनको गोमूत्र चिकित्सा पद्धति से इलाज प्रारंभ होने के औसतन 7.93 माह में औसतन 93.03 प्रतिशत लाभ मिला।

इसके अतिरिक्त मनोवैज्ञानिक रोगों में भी गोमूत्र चिकित्सा का अति उत्तम परिणाम मिला। विभिन्न मनोरोगों से पीड़ित कुल 21 मरीजों को अध्ययन के लिए चुना गया। जिनमें 15 पुरुष एवं 6 महिलाएँ थी, जिनकी औसत उम्र 45.24 वर्ष थी, जोकि औसतन 6.36 वर्षों से पीड़ित थे, उनका गोमूत्र चिकित्सा पद्धति से इलाज किया गया और इलाज प्रारंभ होने के औसतन 9.09 माह में औसतन प्रतिशत लाभ मिला।

थेलीसिमिया और अन्य रक्त संबंधी रोगों के रोगियों पर भी गोमूत्र चिकित्सा पद्धति से उपचार के बाद उत्तम परिणाम देखने को मिले।

पंचगव्य थैरेपी से इतने अच्छे परिणाम देखते हुए इसे घर-घर में पहुँचाने के प्रयास किये जा रहे हैं। यदि आपके जरिए में भी कोई पीड़ित है जो निम्न नम्बर पर संपर्क करे। वेबसाइट पर जाकर फार्म भरें या निम्न वाट्सअप नंबर पर भिजवाइयें।

जैन काउ यूरीन थैरेपी हेल्थ क्लीनिक

165 आर.एन.टी. मार्ग इन्दौर-452001

फोन/वाट्सअप नं. 0731-3599100

वेबसाइट www.cowurine.com

वर्ल्ड बुक ऑफ रिकार्ड्स लंदन से अवार्ड प्राप्त करते हुए वीरेन्द्रकुमार जैन



भारतीय वैज्ञानिकों ने गोमूत्र पर अमेरिकन पेटेंट प्राप्त किये। आधुनिक विज्ञान के प्रकाश में "विभिन्न रोगों पर गोमूत्र पंचगव्य चिकित्सा के प्रभाव" श्री वीरेन्द्र कुमार जैन के नेतृत्व में शोध किये गये। डॉ आनंद ढींगरा, डॉ आर के मित्तल, डॉ पृथ्वीसिंह और गव्यसिद्ध डॉ विवेक जैन ने उन्हें अपना बहुमूल्य सहयोग दिया। परिणाम अत्यधिक उत्साह वर्धक थे। भारत सरकार के पेटेंट विभाग से गोमूत्र पंचगव्य पर प्रथम पेटेंट प्राप्त करने वाले वीरेन्द्र कुमार जैन को वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स लंदन ने भी विश्व रिकॉर्ड अवार्ड देकर सम्मानित किया। यह सम्मान स्व.बप्पी लहरी एवं वीरेन्द्र शर्मा एमपी ब्रिटिश पार्लियामेंट इंग्लैंड के करकमलों से प्राप्त हुआ।

पंचगव्य खेती प्राकृतिक कृषि पद्धति है - वीरेन्द्र कुमार जैन

बदलते क्लाइमेट से पनप रही है कई तरह की बीमारियाँ – सोहन विश्वकर्मा



इंदौर, पंचगव्य, जो गौमाता के गुणों से युक्त है प्राचीन भारतीय संस्कृति में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उपरोक्त विचार म.प्र. एवं छत्तीसगढ़ राज्य विश्व हिंदू परिषद क्षेत्र गोरक्षा प्रमुख सोहन विश्वकर्मा ने पंचगव्य कार्यशाला में व्यक्त करते हुए कहा कि –

पंचगव्य थेरेपी का उपयोग विभिन्न रोगों के इलाज में आजकल बढ़ता जा रहा है क्योंकि बदलते क्लाइमेट से दुनिया में पनप रही है कई तरह की बीमारियाँ। गौमाता के ये पंचगव्य स्वास्थ्य सुधार के लिए एक प्राकृतिक औषधि के रूप में प्रयोग किए जाते हैं। गोमूत्र में एंटीबैक्टीरियल गुण होते हैं जो रोगों से लड़ने में मदद करते हैं, जबकि गोमय का उपयोग अगरबत्ती और धूप के रूप में विशेष रूप से किया जाता है। इसके अलावा, दूध, दही, और घी में पोषक तत्व अधिक होते हैं, जो हमारे शरीर के लिए लाभदायक होते हैं।

वीरेन्द्रकुमार जैन ने कहा कि पंचगव्य खेती भी एक प्राकृतिक कृषि पद्धति है, जिसमें गौमाता से प्राप्त पंचगव्य से खेती करने के लिए फसलरक्षक और खाद का उपयोग

किया जाता है। यह एक पर्यावरण संरक्षणीय और स्वदेशी खेती प्रक्रिया है जो उत्पादन को बेहतर बनाने और खेती से जुड़े किसानों को लाभ पहुंचाने में मदद करती है।

इस पंचगव्य थेरेपी और पंचगव्य खेती के लाभ को हम सभी को समझना चाहिए और इसे अपनी दैनिक जीवन में शामिल करने का प्रयास करना चाहिए। यह एक स्वदेशी तथा संस्कृति का अभिन्न अंग है, जो हमारे प्राचीन विरासत को जीवंत रखता है। इस अवसर पर फोल्डर का विमोचन भी किया गया। प्रारंभ में अध्यक्ष विवेक जैन ने स्वागत किया। आभार सचिव शारदा जैन ने व्यक्त किया।

पनप रही है कई तरह की बीमारियाँ बचने के लिए अपनाएँ पंचगव्य खेती पंचगव्य चिकित्सा



स्वर्णिम फ़ाउंडेशन इंदौर

कैसा भी चर्मरोग हो - मुक्ति मिलेगी पंचगव्य थेरेपी से

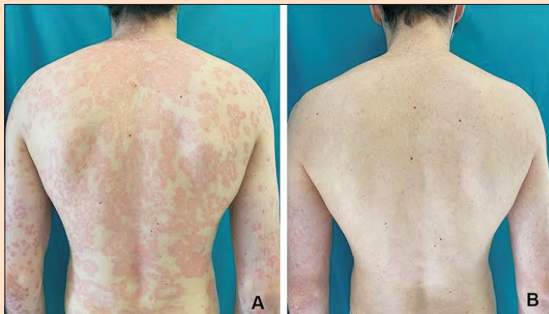
कैसा भी चर्मरोग हो और कितने भी समय से हो आप गोमूत चिकित्सा पध्दति से एकजिमा, सोरायसीस, दाद, खाज, खुजली, फंगल इन्फेक्शन आदि से निजात पा सकते हैं ।

रिसर्च हेतु कुल 68 मरीजों को चुना गया जो विभिन्न चर्मरोगों से पीडित थे । उनका गोमूत चिकित्सा पद्धित याने पंचगव्य और जड़ी बूटियों से बने सिरप, कैप्सूल, मल्हम और ऑयल से इलाज किया गया । इनमें 44 पुरुष व 24 महिलाएँ सम्मिलित थी, जिनकी औसत उम्र 40.29 वर्ष थी । ये सभी औसतन 8 वर्षों से पीडित थे । इनका गोमूत चिकित्सा पद्धित से इलाज प्रारंभ होने के औसतन 6.24 माह में औसतन 88.1 प्रतिशत लाभ मिला ।

चर्म रोगों के लक्षण

(1) पूरे शरीर या किसी एक हिस्से में खुजली चलना । (2) जगह-जगह उभरे हुये चकते बन जाना, उनका बढ़ते जाना । (3) चकतों से सफेद चमड़ी का खिरना । (4) शरीर में फुंसियाँ होना । (5) फुंसियों में पानी का भरना । (6) बड़े-बड़े पानी भरे हुए फोड़े होना । (7) जांघों के बीच दाद का होना, जगह काली पड़ना । (8) चेहरे पर गर्भ के समय काले दाग होना । (9) चेहरे पर कील मुहांसे होना । (10) सफेद दाग । (11) शरीर में जगह जगह मस्से आ जाना । (12) भभूती (13) हाथ की हथेली, तलवों में खुजली चलना व चमड़ी मोटी होना (14) नाखूनों का खुरदुरा होना व सड़ना (15) शरीर के एक तरफ अचानक तेजदर्द के साथ फोड़े उठना (16) जननांगों में लालपन व फुंसियाँ होना (17) आखों के चारों तरफ पीले पीले चकते उठना ।

अनुभव



अखिलेश राजावत पिछले 7 वर्षों से सोरायसिस से ग्रसित थे । यह चर्म रोग विशेष तौर पर उनके दोनों पैरों, पीठ व हाथों पर था, राजावतजी ने एलोपैथिक चिकित्सा ली, परन्तु दवा रुकते ही रोग की तीव्रता पुनः बढ़ जाती । श्री राजावत जी ने मार्च 2001 से गोमूत चिकित्सा लेना शुरू के 15 दिन तक राजावतजी के शरीर से मल द्वारा कीड़े निकलते रहे, माह बाद



राजावत जी 90 प्रतिशत आराम महसूस कर रहे हैं, उनकी पीठ व पैरों पर अब चर्म रोग के लक्षण नहीं हैं ।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें -

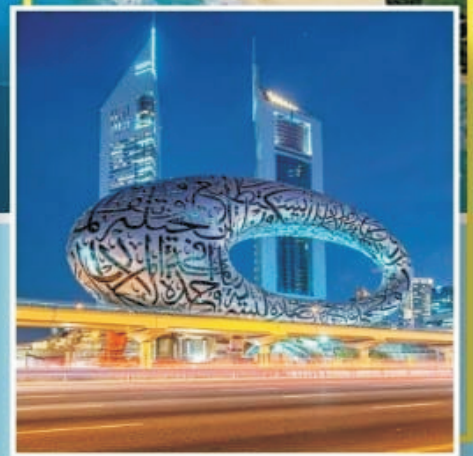
फोन / वाट्सअप नं. 0731-3599100

(सुबह 9 से शाम 6.30 तक)

www.cowurine.com



Majestic Dubai



Daily Departures

☎ Nilesh Mehta: +91 98400 45533 | +91 72007 45533

🌐 www.vutravels.com ✉ nmehta@vutravels.com 📱 @VUtoursandtravels

SWAARNIM FOUNDATION INDORE



गव्यसिद्ध (पंचगव्य विशेषज्ञ) पंचगव्य डिप्लोमा एवं सर्टिफिकेट



गव्यसिद्ध बनने के बाद निम्नलिखित क्षेत्रों में कार्य कर सकते हैं :

- ▶ खुद की प्रैक्टिस : आप प्राइवेट प्रैक्टिस खोलकर अपने खुद के चिकित्सा केंद्र का संचालन कर सकते हैं।
- ▶ आयुर्वेदिक चिकित्सा केंद्र : पंचगव्य थेरेपी द्वारा चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने के लिए आप आयुर्वेदिक चिकित्सा केंद्रों में जॉब कर सकते हैं।
- ▶ स्वास्थ्य संगठनों : आप अस्पताल, आयुर्वेदिक क्लिनिक, प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र, योग और आयुर्वेद संस्थान में नौकरी कर सकते हैं।
- ▶ फार्मसी में पर्यवेक्षक: आप फार्मसी में पर्यवेक्षक के रूप में काम कर सकते हैं।
- ▶ गव्यसिद्ध पंचगव्य थेरेपी प्रैक्टिशनर: गव्यसिद्ध पंचगव्य थेरेपी प्रैक्टिशनर के रूप में कार्य कर सकते हैं।
- ▶ स्वास्थ्य सलाहकार: आप स्वास्थ्य सलाहकार के रूप में काम कर सकते हैं।
- ▶ वेलनेस सेंटर प्रबंधक: आप वेलनेस सेंटर प्रबंधक के रूप में काम कर सकते हैं।



पढ़ाने का तरीका

प्रशिक्षण पूर्व रिकॉर्ड किए गए डेमो, ऑनलाइन नोट्स, असाइनमेंट के माध्यम से किया जाता है। प्रत्येक विषय में विषयों की सूची होती है। प्रत्येक विषय को पूरा करने के लिए, आपको पहले विषय को पूरा करना होता है। एक विषय को पूरा करने के लिए आपको लॉगिन करना, डेमो देखना, नोट्स पढ़ना होता है।

एडवांस डिप्लोमा इन आयुर्वेद एंड पंचगव्य थेरेपी (ADAPT)

एडवांस डिप्लोमा इन इंटीग्रेटेड आयुर्वेद एंड पंचगव्य थेरेपी (ADIPT)

डिप्लोमा इन पंचगव्य थेरेपी (DPT)

एडवांस डिप्लोमा इन पंचगव्य थेरेपी (ADPT)

सर्टिफिकेट इन पंचगव्य थेरेपी (CPT)

उपरोक्त कोर्स होने के पश्चात आपको बीएसएस वोकेशनल कोर्स डिप्लोमा प्रदान किया जाएगा | BSS भारत सेवक समाज, योजना आयोग, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय विकास एजेंसी है |

एडमिशन प्रारंभ

Visit - www.swaarnimfoundation.com

Swaarnim
Naturescience Limited

फार्मसी

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

स्वर्णिम फाउंडेशन

JAIN'S
COW URINE THERAPY

क्लिनिक

165, आरएनटी मार्ग, इंदौर - 452001 | ☎/📞 9755587887 | समय - सुबह 10 से दोपहर 4 बजे तक

वेबसाइट- www.swaarnimfoundation.com, ईमेल- mail@swaarnimfoundation.com